शोध साहित्य SHODH SAHITYA
INTERNATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL
(समसामयिक विषयों पर केंद्रित बहुविषयक मासिक ई-शोध पत्रिका)
E-ISSN 2584-2447
Year -1
Vol -6
April
2024

कबीर दास का समाज और धर्म : एक विश्लेषण

डॉ. गरिमा द्विवेदी
सहायक प्राध्यापक
राजीव गांधी डी.ए.वी. डिग्री कॉलेज, बांदा (उत्तर प्रदेश)

शोध सारांश

कबीर दास जी को वास्तव में केवल एक कवि के रूप में नहीं देखा जा सकता है, बल्कि उन्हें समाज सुधारक और धार्मिक विचारक के रूप में भी जाना जाता है। उनकी रचनाएँ न केवल साहित्य के क्षेत्र में महत्वपूर्ण हैं, बल्कि सामाजिक, धार्मिक, और नैतिक दृष्टिकोण से भी महत्वपूर्ण हैं। कबीर जी के द्वारा प्रस्तुत किए गए उनके दोहे, भजन, और अन्य काव्यात्मक रचनाएँ समाज को जागरूक करती हैं और उन्हें धर्म, समाज, और मानवता के महत्वपूर्ण मुद्दों पर विचार करने के लिए प्रेरित करती हैं। उनके द्वारा उठाए गए विविध मुद्दे जैसे कि समाज में विभेद, धार्मिक भेदभाव, और मनुष्य के मौलिक अधिकारों की महत्वता, उनकी रचनाओं में प्रतिबिम्बित होते हैं। इसके अलावा, कबीर दास जी का संघर्ष उस समय की सामाजिक और धार्मिक समस्याओं के खिलाफ उनके कविताओं के माध्यम से भी व्यक्तिगत और सामाजिक स्तर पर था।

कुंजी भूत शब्द

महापुरुष, कर्मकांड, नाथपंथि, मगहर, लहरतारा, बीजक, रमैनी, साखी, सबद, जुलाहा, नीरू, नीमा, सधुक्कड़ी

भारत भूमि पर जिन अमर विभूतियों का अवतरण हुआ उनमें से एक कबीर दास थे। कबीर दास कबीर साहब एवं संत कबीर जैसे नाम से प्रसिद्ध रहे। कबीर मध्यकालीन भारत के स्वाधीनचेता महापुरुष थे। उनका जन्म ऐसे समय में हुआ जब भारतीय समाज और धर्म का स्वरूप अंधकारमय हो रहा था। भारत की राजनीतिक सामाजिक आर्थिक एवं धार्मिक अवस्थाएं सोचनीय हो गई थीं। एक तरफ मुसलमान शासको की धर्मांधता से जनता त्राहि त्राहि कर रही थी और दूसरी तरफ हिंदुओं के कर्मकांडों, विधानों एवं पाखंडों से धर्म बाल का ह्रास हो रहा था। जनता के भीतर भक्ति भावनाओं का सम्यक प्रचार नहीं हो रहा था। सिद्धों के पाखंड पूर्ण वचन समाज में वासना को आश्रय दे रहे थे।

E-ISSN 2584-2447
Year -1 Vol -6 April 2024

नाथपंथियों के अलखनिरंजन में लोगों का हृदय रम नहीं रहा था। ज्ञान और भक्ति दोनों तत्व केवल ऊपर के कुछ पढ़े लिखे लोगों की बपौति के रूप में दिखाई दे रहा था। ऐसे नाजुक समय में एक बड़े और भारी समन्वयकारी महात्मा की आवश्यकता समाज को थी। जो राम और रहीम के नाम पर अज्ञानतावश लड़ने वाले लोगों को सच्चा रास्ता दिखा सके। ऐसे ही संघर्ष के समय मस्तमौला कबीर का प्रार्दुभाव हुआ। हालांकि कबीर का कोई प्रामाणिक जन्म काल ज्ञात नहीं है। उनके जन्म के संबंध में अनेक कीवदंतियां हैं तथा भिन्न-भिन्न मत हैं। कबीर कसौटी में इनका जन्म संवत् 1455 दिया गया है। भक्ति सुधा बिंदु स्वाद में इनका जन्म काल संवत 1451 से संवत 1452 के बीच माना गया है। कबीर चरित्र बांध में इसकी चर्चा कुछ इस तरह की गई है संवत 1455 विक्रमी ज्येष्ठ सुदी पूर्णिमा सोमवार के दिन, एक प्रकाश के रूप में सत्य पुरुष काशी के लहर तारा में उतरे। उस समय पृथ्वी और आकाश प्रकाशित हो गया। समस्त तालाब प्रकाश से जगमगा गया। हर तरफ प्रकाश ही प्रकाश दिखने लगा। फिर वह प्रकाश तालाब में ठहर गया। उस समय तालाब पर बैठे अष्टानंद वैष्णव आश्चर्यमय प्रकाश को देखकर आश्चर्यचकित हो गए। जबकि कुछ लोगों के अनुसार वे रामानंद स्वामी के आशीर्वाद से काशी की एक विधवा ब्राह्मणी के गर्भ से पैदा हुए थे। जिसको भूल से रामानंद जी ने पुत्रवती होने का आशीर्वाद दे दिया था। ब्राह्मणी उसे नवजात शिशु को लहरतारा ताल के पास फेक आई थी।[1]

कबीर के माता-पिता के विषय में एक राय निश्चित नहीं है। कबीर नीमा और नीरू की वास्तविक संतान थे या नीमा और नीरू ने केवल इनका पालन पोषण ही किया था। कहा जाता है कि नीरू जुलाहे को यह बच्चा लहरतारा तालाब पर पड़ा मिला था। जिसे वह अपने घर ले आया और उसका पालन पोषण किया। बाद में यही बालक कबीर कहलाया।

जाति जुलाहा नाम कबीरा, बनि बनि फिरो उदासी।[2]

कबीर पंथियों की मान्यता है कि कबीर की उत्पत्ति काशी में लहरतारा तालाब में उत्पन्न कमल के मनोहर पुष्प के ऊपर बालक के रूप में हुई। ऐसा भी कहा जाता है कि कबीर जन्म से मुसलमान थे और युवावस्था में स्वामी रामानंद के प्रभाव से उन्हें हिंदू धर्म का ज्ञान हुआ। एक दिन कबीर पंचगंगा घाट की सीढ़ियों पर गिर पड़े थे। रामानंद जी उसी समय गंगा स्नान करने के लिए सीढ़ियां उतर रहे थे कि उनका पैर कबीर के शरीर पर पड़ गया। उनके मुख से तत्काल राम-राम शब्द निकल पड़ा। इस राम को कबीर ने दीक्षा मंत्र मान लिया और रामानंद जी को अपना गुरु स्वीकार कर लिया। कबीर के ही शब्दों में "हम काशी में प्रकट

भए हैं, रामानंद चेताये। अन्य जनश्रुतियों से ज्ञात होता है कि कबीर ने हिंदू मुसलमान का भेद मिटाकर हिंदू भक्तों तथा मुसलमान फकीरों का सत्संग किया और दोनों की अच्छी बातों को आत्मसात कर लिया।[3]

जनश्रुतियों के अनुसार कबीर के एक पुत्र कमल तथा पुत्री कमाली थी। इतने लोगों की परवरिश करने के लिए उन्हें अपने करघे पर काफी काम करना पड़ता था। साधु संतों का तो घर में जमावड़ा रहता ही था। कबीर को कबीर पंथ में बाल ब्रह्मचारी और वैरागी माना जाता है। इस पंथ के अनुसार कामात्य उसका शिष्य था और कमाली तथा लोई उनकी शिष्या थीं। लोई शब्द का प्रयोग कबीर ने एक जगह कंबल के रूप में भी किया है।वस्तुतः कबीर की पत्नी और संतान दोनों थे। कबीर संत कबीर और समाज सुधारक दोनों थे। उनकी कविता का एक-एक शब्द पाखंडियों के पाखंडवाद और धर्म के नाम पर ढोंग व स्वार्थ पूर्ति की निजी दुकानदारों को ललकारता हुआ आया और असत्य व अन्याय की पोल खोल धज्जियां उड़ाता चला गया। कबीर का अनुभूत सत्य अंधविश्वासों पर बारूदी पलीता था। सत्य भी ऐसा जो आज के परिवेश पर सवालिया निशान बन चोट भी करता है और खोट भी निकालता है।[4]

कबीर दास ने बोलचाल की भाषा का ही प्रयोग किया है। भाषा पर कबीर का जबरदस्त अधिकार था। वह वाणी की डिक्टेटर थे। जिस बात को उन्होंने जिस रूप में प्रकट करना चाहा उसे उसी रूप में कहा। भाषा कुछ कबीर के सामने लाचार सी नजर आती है। उसमें मानों ऐसी हिम्मत ही नहीं कि लापरवाह फक्कड़ की किसी फरमाइश को नहीं कर सके और अकही कहानी को रूप देकर मनोग्राही बना देने की तो जैसी ताकत कबीर की भाषा में है वैसी बहुत ही काम लेखन में पाई जाती है। असीम अनंत ब्रह्मानंद में आत्मा का साक्षीभूत होकर मिलना कुछ वाणी के अगोचर, पकड़ में ना आ सकने वाली ही बात है। पर 'बेहद्दी मैदान में रहा कबीर' में न केवल उस गंभीर निर्गुण तत्व को मूर्तिमान कर दिया गया है, बल्कि अपनी फक्कड़ाना प्रकृति की मुहर भी लगा दी गई है। वाणी के ऐसे बादशाह को साहित्य रसिक काव्यानंद का आस्वादन कराने वाला समझे तो उन्हें दोष नहीं दिया जा सकता। फिर व्यंग्य करने में और चुटकी लेने में भी कबीर अपना प्रतिद्वंद्वी नहीं जानते। पंडित और काजी, अवधु और जोगिया, मुल्ला और मौलवी सभी उनके व्यंग्य से तिलमिला जाते थे।[5] अत्यंत सीधी भाषा में वह ऐसी चोट करते हैं कि खाने वाला केवल धूल झाड़ के चल देने के सिवा और कोई रास्ता नहीं पाता। कबीर की रचनाओं में अनेक भाषाओं के शब्द मिलते हैं यथा अरबी, फारसी, पंजाबी, बुंदेलखंडी, ब्रजभाषा, खड़ी बोली आदि के शब्द मिलते हैं। इसलिए उनकी भाषा को 'पंचमेल खिचड़ी' या 'सधुक्कड़ी' भाषा कहा जाता है।[6]

E-ISSN 2584-2447
Year -1 Vol -6 April 2024

रचनाएं

कबीर दास ने हिंदू मुसलमान का भेद मिटाकर हिंदू भक्तों तथा मुसलमान फकीरों का सत्संग किया और दोनों की अच्छी बातों को हृदयांगम कर लिया। संत कबीर ने स्वयं ग्रंथ नहीं लिखे। उन्होंने जो मुंह से बोला उनके शिष्यों ने उसे लिख लिया। कबीर दास अनपढ़ थे। कबीर दास के समस्त विचारों में राम नाम की महिमा प्रतिध्वनित होती है। वे एक ही ईश्वर को मानते थे और कर्मकांड के घोर विरोधी थे। अवतार, मूर्ति, रोजा, ईद मस्जिद, मंदिर आदि को वह नहीं मानते थे। कबीर के नाम से मिले ग्रंथों की संख्या भिन्न-भिन्न लेखों के अनुसार भिन्न-भिन्न है। कबीर की वाणी का संग्रह बीजक के नाम से प्रसिद्ध है। इसके तीन भाग हैं प्रथम रमैनी, द्वितीय सबद और तृतीय साखी।[7]

बीजक

'बीजक' कबीर दास के मतों का पुराना और प्रामाणिक संग्रह है। इसमें संदेह नहीं। एक ध्यान देने योग्य बात इसमें यह है कि बीजक में 84 रमैनियां हैं । रमैनियां चौपाई छंद में लिखी गई हैं। इनमें कुछ रमैनियां ऐसी हैं जिनके अंत में एक-एक साखी उद्धत की गई है। साखी उद्धत करने का अर्थ यह होता है कि कोई दूसरा आदमी मानो इन रमैनियों को लिख रहा है और इस रमैनी रूप व्याख्या के प्रमाण में कबीर की साखी या गवाही पेश कर रहा है।[8]

कबीर दास का व्यक्तित्व संत कवियों में अद्वितीय है। हिंदी साहित्य के 1200 वर्षों के इतिहास में गोस्वामी तुलसीदास जी के अतिरिक्त इतना प्रतिभाशाली व्यक्तित्व किसी कवि का नहीं है। कबीर के दर्शन पर शोध 18वीं शताब्दी में आरंभ हो चुका था। किंतु उसका वैज्ञानिक विवेचन सन 1903 में एच एच विंसन ने किया। उन्होंने कबीर पर 8 ग्रंथ लिखे। इसके बाद विशप जे एच वेप्काट ने कबीर द्वारा लिखित 84 ग्रंथों की संपूर्ण सूची प्रस्तुत की। इस प्रकार अयोध्या सिंह उपाध्याय हरिऔध द्वारा संपादित कबीर वचनावली में 21 ग्रंथ, डॉ रामकुमार वर्मा द्वारा रचित हिंदी साहित्य के आलोचनात्मक इतिहास में 61 ग्रंथ तथा नागरी प्रचारिणी सभा की रिपोर्ट में 140 ग्रंथों की सूची मिलती है। कबीर ग्रंथावली में कुल 809 सखियां, 403 पद और 7 रमैनियां संग्रहित हैं। साहित्यिक क्षेत्र में पदों और साखियों का ही अधिक प्रचार हुआ। परंतु बीजक प्रायः उपेक्षित रहा। अमृतसर के गुरुद्वारे में बीजक का ही पाठ होता है। कबीर के दार्शनिक सिद्धांतों का सार बीजक में उपलब्ध है। कबीर का प्रमुख साहित्य रमैनी, साखी और सबद बीजक में उपलब्ध है। डॉक्टर पारसनाथ तिवारी ने बीजक के 32 संस्करणों की सूची दी है।[9]

मृत्यु

कबीर ने काशी के पास मगहर में देह त्याग दी। ऐसी मान्यता है की मृत्यु के बाद उनके शव को लेकर विवाद उत्पन्न हो गया था। हिंदू कहते थे कि उनका अंतिम संस्कार हिंदू रीति से होना चाहिए और मुस्लिम कहते थे कि मुस्लिम रीति से। इसी विवाद के चलते जब उनके शव पर से चादर हटाई गईं तब लोगों ने वहां फूलों का ढेर पड़ा देखा। बाद में आधे फूल हिंदुओं ने ले लिए और आधे मुसलमान ने। मुसलमान ने मुस्लिम रीति से और हिंदुओं ने हिंदू रीति से उन फूलों का अंतिम संस्कार किया। मगहर में कबीर की समाधि है। जन्म की भांति उनकी मृत्यु की तिथि एवं घटना को लेकर भी मतभेद है। किंतु अधिकतर विद्वान उनकी मृत्यु संवत् 1575 विक्रमी (सन1518 ई) मानते हैं लेकिन बाद में कुछ इतिहासकार उनकी मृत्यु 1448 को मानते हैं।[10]

इस प्रकार कहा जा सकता है कि महात्मा कबीर दास के जन्म के समय में भारत की राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक एवं धार्मिक दशा सोचनी थी। एक तरफ मुसलमान शासको की धर्मांता से जनता परेशान थी और दूसरी तरफ हिंदू धर्म के कर्मकांड विधान और पाखंड से धर्म का ह्रास हो रहा था। जनता में भक्ति भावना का सर्वथा अभाव था। पंडितों के पाखंड पूर्ण वचन समाज में फैले थे। ऐसे संघर्ष के समय में कबीर दास का प्रादुर्भाव हुआ। जिस युग में कबीर आविर्भूत हुए थे उसके कुछ समय ही पूर्व भारतवर्ष के इतिहास में एक अभूतपुर्व घटना घट चुकी थी। यह घटना इस्लाम जैसे एक सुसंगठित संप्रदाय का आगमन था। इस घटना ने भारतीय धर्म मत और समाज व्यवस्था को बुरी तरह से झकझोर दिया था। उसकी अपरिवर्तनीय समझी जाने वाली जाति व्यवस्था को पहली बार जबरदस्त ठोकर लगी थी। सारा भारतीय वातावरण संक्षुब्ध था। बहुत से पंडितजन इस संक्षोभ का कारण खोजने में व्यस्त थे। और अपने-अपने ढंग से भारतीय समाज और धर्म मत को संभालने का प्रयत्न कर रहे थे। वस्तुतः उन्हें उनके जीवन काल में ही सफल साधक, भक्त, कवि, मतप्रवर्तक अथवा समाज सुधारक के रूप में मान्यता मिल चुकी थी। वास्तव में संत कबीर दास हिंदी साहित्य के भक्ति काल के इकलौते ऐसे कवि हैं जो आजीवन समाज और लोगों के बीच व्याप्त आडंबरों पर कुठाराघात करते रहे। वे कर्म प्रधान समाज के पैरोकार थे और इसकी झलक उनकी रचनाओं में साफ झलकती है। लोक कल्याण हेतु ही मानो उनका समस्त जीवन था। कबीर को वास्तव में एक सच्चे विश्व प्रेम का अनुभव था। कबीर की सबसे बड़ी विशेषता थी कि उनकी प्रतिभा में अबाध गति और अदम्य प्रखरता थी। समाज में कबीर को जागरण युग का अग्रदूत कहा जाता है।

संदर्भ

1. कबीरपंथी, रणजीत, कबीर जीवनी।
2. दास अभिलाष, बीजक, पारख प्रकाशन।
3. डॉ. गुप्त माता प्रसाद, कबीर ग्रंथावली, साहित्य भवन, इलाहाबाद।
4. कबीरपंथी, रणजीत, कबीर जीवनी।
5. डॉ. वर्मा रामकुमार, संत कबीर, साहित्य भवन इलाहाबाद।
6. डॉ. गुप्त माता प्रसाद, कबीर ग्रंथावली, साहित्य भवन, इलाहाबाद।
7. शुक्ल रामदेव, कहत कबीर, सर्व भाषा ट्रस्ट, दिल्ली।
8. झा जे एस, संत कबीर का धर्म दर्शन, के पी जायसवाल अनुसंधान, पटना।
9. शास्त्री गंगाशरण, कबीर जीवन चरित्र, कबीरवाणी प्रकाशन केन्द्र, वाराणसी।
10. सिंह शेखर हिमांशु, भारतीय चिंतन और कबीर, संजय बुक सेंटर, वाराणसी।

SHODH SAHITYA शोध साहित्य